केतु ग्रह के लिए मंत्र

निम्नलिखित केतु ग्रह के मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप श्रद्धा और विश्वास से किसी शुभ मुहूर्त या शुक्लपक्षीय बृहस्पतिवार के दिन रात्रि के समय से आरम्भ करना चाहिये। केतु ग्रह के मंत्र का जप अपने सामर्थ्यानुसार, माला से, पश्चिम दक्षिण दिशा की ओर मुख करके करें। यदि सम्भव हो तो तेल का दीपक जलाकर प्रतिदिन या शनिवार और बुधवार को अवश्य करना चाहिये। केतु ग्रह के मंत्र जप के पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए केतु ग्रह के वैदिक मंत्र या पौराणिक मंत्र का जप करना या करवाना चाहिये, और अंत में दशमांश संख्या का हवन भी कुशा या आम की समिधा से करना चाहिये।

वैदिक मंत्र

ऊँ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे। सुमुषद्भिरजायथाः।।

पौराणिक मंत्र

पलाशपुष्पसंड्काशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

ध्यान मंत्र

धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः।

गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः।।

केतु के लिए गायत्री मंत्र

ऊँ धूम्रवर्णाय विद्‌महे

कपोतवाहनाय धीमहि।

तन्नोः केतुः प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

तांत्रोक्त मंत्र

ऊँ कें केतवे नमः।

ऊँ ह्रीं केतवे नमः।

सामान्य मंत्र

ऊँ कें केतवे नमः।

श्री रघुनाथ शरणं ममः।

उपरोक्त किन्हीं या अधिक मंत्रों का जप श्रद्धा और विश्वास से रात्रि के समय करना चाहिये।